ISSN: 2583-8288
Popular Article
Published on:16 /04/2025

गर्मियों में दुधारू पशुओं की देखभाल तथा अतिताप से बचाव हेतु उपाय

कृतिका पटेल[1], मंजू साहू[2], कंचन कुशवाहा[3], ऋत्वि पटेल[4], प्रणव कुमार त्रिपाठी[5]

[1]स्नातकोत्तर छात्रा, यूपी पंडित दीन दयाल उपाध्याय पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय एवं गो अनुसंधान संस्थान, दुवासू मथुरा –२८१००१, उत्तर प्रदेश

[2]विद्यावरिधि शोधछात्रा, पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, बरकछा, मिर्जापुर–२३१००१ ,उत्तर प्रदेश

[3]स्नातकोत्तर छात्रा, यूपी पंडित दीन दयाल उपाध्याय पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय एवं गो अनुसंधान संस्थान, दुवासू मथुरा–२८१००१, उत्तर प्रदेश

[4]स्नातकोत्तर छात्रा, पशु चिकित्सा विज्ञान एवं पशुपालन महाविद्यालय, कामधेनु विश्वविद्यालय, आणंद–३८८००१, गुजरात

4प्रणव कुमार त्रिपाठी , स्नातकोत्तर छात्र, भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर बरेली –२४३१२२, उत्तर प्रदेश

DOI:10.5281/Vettoday.15245066

"भारतीय अर्थव्यवस्था में पशुधन महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ऐतिहासिक काल से ही पशुपालन भारतीय संस्कृति का हिस्सा रहा है। पशुपालन में पशुओं का विकास, उत्पादन और प्रजनन महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है जो विभिन्न कारणों से प्रभावित हो सकते है, जिनमें से एक कारक अतिताप या हाइपरथर्मिया भी है। गर्मी का तनाव पशुधन उत्पादन के लिए एक गंभीर चुनौती प्रस्तुत करता है। गर्मियों में दुधारू पशुओं की अतिताप एक महत्वपूर्ण पर्यावरणीय समस्या है जो उनके स्वास्थ्य, आहार एवं पोषण क्षमता को प्रभावित करता है। इन प्रभावों से किसानों को आर्थिक नुकसान हो सकता है। इस लेख में अतिताप के कारणों का विस्तार से विवेचन किया गया है और उसके रोकथाम के उपाय बताये गये हैं जो पशुओं के स्वास्थ्य को बचाने के साथ–साथ देश की अर्थव्यवस्था को भी बचाने में सहायक हो सकते हैं।"

भारत एक विविध जलवायु वाला देश है, जहाँ हर मौसम अपनी विशेषताओं के साथ आता है। गर्मियों का मौसम (ग्रीष्म ऋतु) भारत में विशेष रूप से मार्च से जून तक रहता है। यह ऋतु मानव जीवन के साथ पशुओं के जीवन को भी अत्यधिक प्रभावित करती है। धूल भरी आँधियाँ और लू चलना इस मौसम में सामान्य हैं। देश के उत्तर–पश्चिमी भाग, जैसे राजस्थान और दिल्ली में, तापमान 40–45 डिग्री सेल्सियस तक पहुँच सकता है। ग्रीष्म ऋतु में पर्यावरण के तापमान में वृद्धि होने के कारण जब पशुओं के आंतरिक शरीर का तापमान सामान्य से अधिक हो जाता है, तो इसे हाइपरथर्मिया या गर्मी का तनाव या अतिताप कहा जाता है।

हीट स्ट्रोक या लू लगना : पशुओं में सबसे अधिक होने वाली गंभीर स्थिति है जिसमें शरीर के तापमान पर नियंत्रण खो जाता है। ग्रीष्म ऋतु में चलने वाली गर्म हवाओं से पशुओ में शुष्कता आ जाती है तथा पानी की कमी हो जाती है।

इसका प्रभाव पशुओं की पाचन प्रक्रिया पर भी पड़ता है जिससे उनकी दूध उत्पादन क्षमता भी घट जाती है। अतिताप के तनाव का पशुओ की रोग प्रतिरोधक क्षमता पर भी बुरा असर पड़ता है।

पशुओं में अतिताप के कई कारण हो सकते हैं जैसे पर्यावरणीय कारण, बीमारियाँ, मस्तिष्क के घाव, या तीव्र गतिविधि । इनमें से उच्च पर्यावरणीय तापमान और लंबे समय तक होने वाला तनाव मुख्य हैं।

उच्च पर्यावरणीय तापमान के प्रति उनकी सहिष्णुता की दर में प्रजातियों से प्रजातियों, और नस्ल से नस्ल के बीच अंतर होता है। भैंसों में पशुओं की अन्य प्रजातियों की तुलना में गर्मी की सहनशीलता की दर कम होती है। दुधारू पशु उच्च पर्यावरणीय तापमान के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं और पर्यावरणीय तापमान बढ़ने पर पशुओं मे बुखार ,हृदय और श्वसन दर में उल्लेखनीय वृद्धि दिखती हैं।

अतिताप के अन्य कारण इस प्रकार हैं –

- न्यूरोजेनिक हाइपरथर्मिया
- गर्म वातावरण के संपर्क में आने से अतिताप हो सकता है।
- पर्याप्त पानी न पीने से हाइपरथर्मिया हो सकता है।
- जैसे–जैसे जानवरों की उम्र बढ़ती है, उनकी त्वचा बदलाव आता है, जिससे उनके लिए अपने तापमान को नियंत्रित करना मुश्किल हो जाता है।
- संक्रमण, हृदय रोग , फेफड़ों की बीमारी और गुर्दे की बीमारी सभी अतिताप का कारण बन सकते हैं।
- कुछ दवाएं और जहरीले पदार्थ अतिताप का कारण बन सकते हैं।
- पशुओं में अत्याधिक तनाव भी अतिताप का कारण बन सकता है।

जब तक शरीर का तापमान एक महत्वपूर्ण बिंदु तक नहीं पहुंच जाता है, तब तक अतिताप की एक छोटी अवधि फायदेमंद होती है। यह आक्रमणकारी रोगजनकों को बाधित करता है रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि होती है। यदि अतिताप की अवधि लंबी है, तो चयापचय में वृद्धि और भोजन के सेवन में कमी के कारण हानिकारक प्रभाव बढ़ जाते हैं।

लक्षण

- पशु के शरीर के तापमान में सामान्य से वृद्धि अतिताप का प्राथमिक संकेत है।
- अतिताप के अधिकांश मामलों में बुखार 103 डिग्री से अधिक और यहां तक कि 110 डिग्री तक पहुँच जाता है।
- पशु के हृदय और श्वसन दर में वृद्धि।
- पशु बेचैन हो जाता है लेकिन जल्द ही सुस्त हो जाता है, चलने में कठिनाई होती है और लेट जाता है।
- पशु खाना पीना छोड़ देता है।
- रोगी पशु को सांस लेने में कठिनाई होती है।
- रोगी पशु के मुख से लार आना।
- गंभीर अवस्था में या समय पर उपयुक्त इलाज न मिलने से पशुओं में मृत्यु दर बढ़ जाती है।
- अधिकांश पशुओं में मृत्यु तब होती है जब लंबे समय तक 106–108 डिग्री बुखार बना रहता है।
- लंबे समय तक गर्मी के तनाव के कारण पशुओं में प्रजनन दर पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

उपचार एवं रोकथाम

- हल्के अतिताप के लिए किसी उपचार की आवश्यकता नहीं होती है। यह आमतौर पर पशु के लिए हानिकारक नहीं होता है। रोग प्रक्रिया का प्रभावी ढंग से इलाज करके, समय के साथ बुखार को कम किया जा सकता है।

गंभीर अतिताप के लिए उपचार की आवश्यकता होती है।

- पशु को गर्म वातावरण से हटा कर उन्हें हवादार एवं छाया वाली ठंडी जगह में रखें।
- पशु के शरीर पे लगातार ठंडा पानी लगाने के लिए स्प्रे या नली का उपयोग किया जा सकता है। बर्फ के पानी का उपयोग नहीं करना चाहिए क्योंकि ये पशु के लिए हानिकारक हो सकता है।
- थर्मामीटर से पशु के तापमान की नियमित रूप से जांच करें और तापमान की निगरानी करें।
- गर्मी से बचाव के लिए पंखे का उपयोग करें।
- रोगी पशु के आराम को बनाए रखने के लिए आश्रय और ठंडे पानी का पर्याप्त प्रावधान महत्वपूर्ण हैं।
- अतिताप के लक्षण दिखने पे तुरंत अपने नजदीकी पशु चिकित्सक से संपर्क करें, ताकि समय रहते पशुओं को इस से बचाना संभव हो।

अतिताप से बचाव हेतु उपाय

- गर्मियों में पशुगृह में पंखे या कूलर की व्यवस्था करके ठंडा रखा जा सकता है।
- पशुओं को गर्मियों में अतिताप से बचाने के लिए पशुओं को पेड़ की छाया में बाँधना चाहिए।
- पशुशाला में फव्वारे के माध्यम से पशुओ के तापमान को नियंत्रित रखा जा सकता है।
- पशुगृह में हवा के आने जाने का उचित प्रबंधन होना चाहिए।
- पशुगृह में पशुओं के लिए ठंडे पानी का पर्याप्त प्रावधान होना चाहिए।

स्वच्छ पानी की निरंतर उपलब्धता आवश्यक है

- पशुशाला के दरवाजो एवं खिड़कियो पर जूट के बोरे लगाकर उसे ठंडा रखा जा सकता है।
- पशुशाला की छत की उचाई कम से कम 12 फीट होनी चाहिए।
- यदि संभव हो तो पशुओं को तालाब में नहलाने से भी पशु का तापमान संतुलित रहता है।
- पशुओं के चारे में कैल्शियम एवम प्रोटीन की मात्रा उचित होनी चाहिए।

पशुशाला में कूलर तथा स्प्रिंकलर की समुचित व्यवस्था